वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 107 | शनिवार 10 अगस्त 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

60 से अधिक लोक कलाकारों ने दी विभिन्न प्रस्तुतियां

जवाहर कला केन्द्र के मंच पर बिखरी आदिवासी संस्कृति की छटा, पद दंगल गायन रहा खास

जयपुर. कासं। जवाहर कला केंद्र की ओर से शुक्रवार को आदिवासी दिवस के अवसर पर आदिवासी महोत्सव का आयोजन किया गया। इस मौके पर 65 कलाकारों ने आदिवासी संस्कृति के सौंदर्य से सराबोर करने वाली मनमोहक नृत्य व गायन की प्रस्तुति दी। कला प्रेमियों ने आदिवासी गीत गायन, हेला ख्याल, कन्हैला ख्याल, पद दंगल गायन प्रस्तुति का लुत्फ उठाया। पारंपरिक परिधानों में तैयार होकर कलाकार केन्द्र के डोम एरिया में एकत्रित हुए। यहां उन्होंने वाद्य यंत्रों की धुन के साथ प्रस्तुति की झलक दिखाई। इसके बाद सभी रंगायन पहुंचे। यहां कलाकारों ने सर्वप्रथम आदिवासी गीत गायन की प्रस्तुति दी। इसके बाद फाल्गुन मास में किया जाने वाला जाड़ोल गाँव के प्रसिद्ध नृत्य घूमरा नृत्य ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। इसके बाद कन्हैया दंगल और हेला ख्याल प्रस्तुत किया। इस दौरान उन्होंने अपने अंदाज में 'श्यामा और गोपाल' की प्राचीन कथा का चौपाईयों में वर्णन किया। यह कथा एक भाई और बहन की कथा है जिसका मर्म है कि श्यामा मेले में जाने के लिए अपनी भाभी से ओढ़नी मांगती है और उसकी भाभी इसी शर्त पर देती है कि उसमें कोई दाग लगा तो वह ओढ़नी उसी के खून से रंगवाएगी। आखिरकार चुंदड़ी मैली हो जाती है और श्यामा का भाई गोपाल बहन का सिर काटकर ओढ़नी रंगता है। कुछ ही देर में उसके भाई गोपाल की भी मृत्यु हो जाती है। चूंकि श्यामा चौथ माता की भक्त थी तो मां अवतरित होकर उसे पुनर्जीवित करती हैं लेकिन फिर भी वह वरदान स्वरूप भाई के लिए जीवन दान मांगती है।

हरियालों राजस्थान अभियान

महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय में किया पौधारोपण

जयपुर. कासं। हरियालों राजस्थान और एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय चकबंदी झोटवाड़ा जयपुर में पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर सरपंच पर प्रहलाद शर्मा, एसएमसी, एसडीएम सदस्यों और जनप्रतिनिधियों ने और गांव के गणमान्य लोगों ने विद्यालय परिवार के साथ मिलकर के पौधारोपण किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य अरविंद कुमार मिश्रा ने विद्यालय परिसर, चारागाह, गौशाला सहित कई स्थानों पर पौधारोपण किया।

अंहकार के टूटने पर भीतर का ज्ञान प्रकट होता है: मुनि प्रणम्य सागर जी

रविवार को मीरामार्ग पर सजेगी सम्मेद शिखर की सजीव रचना

जयपुर. कासं। संत शिरोमणि आचार्य 108 विद्यासागर महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज के मुखारबिन्द से मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर कवि भूधरदास द्वारा विरचित पार्श्वनाथ पुराण का वाचन किया गया जिसमें जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के वज्रनाभि भव के बारे में बताया कि हम सब शरीर और आत्मा को एक मानते हैं जबकि शरीर तो ऐसा है कि खिलाने - पिलाने से दुखी करता है और यदि उसे सुखाएं तो सुखी करता है। मुनि श्री ने कहा कि जिसका जैसा बीज होगा, उत्पाद भी उसका वैसा ही होगा। यह देह इतनी अपवित्र है कि इसे सागर के जल से धोएं तो भी शुद्ध नहीं होगी। पंच इन्द्रिय जीव की यह देह नो मल द्वारों से युक्त होती है। फिर भी हम इसे पालने व परोसने के लिए नित नये जतन करते हैं। इसी प्रसंग में मुनि श्री ने जैन शरीर विज्ञान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऋतुओं के साथ यदि शरीर को चलाओगे तो शरीर को स्वस्थ रख पाओगे। देह से राग घटने पर आत्मा में राग बढ़ता है और अंहकार के टूटने पर भीतर का ज्ञान प्रकट होता है। इससे पूर्व शुभम भैया एवं संगीतकार नरेन्द्र जैन के निर्देशन में आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की संगीतमय पूजा की गई। आचार्य समय सागर महाराज एवं मुनि प्रणम्य सागर महाराज का अर्घ्य चढ़ाया गया। तत्पश्चात समाजश्रेष्ठी मंजू, जितेश - नेहा, अखर लुहाडिया परिवार द्वारा संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज एवं आचार्य समय सागर महाराज के चित्र का जयकारों के बीच अनावरण किया गया। भगवान आदिनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। तत्पश्चात मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन एवं शास्त्र भेट करने का पुण्यार्जन किया। समिति के एडवोकेट राजेश काला एवं अशोक गोधा ने बताया कि इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के रूप में दिगम्बर जैन महासमिति के राजस्थान अंचल अध्यक्ष सेवानिवृत्त आई पीएस अनिल जैन, महामंत्री महावीर बाकलीवाल, उत्तम कुमार पाण्डया, राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, भाग चन्द बाकलीवाल मित्रपुरा, राजेश काला ने मुनि श्री को श्रीफल भेट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं मंत्री राजेन्द्र सेठी ने अतिथियों को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। समिति के कार्यकारिणी सदस्य एडवोकेट राजेश काला एवं अशोक गोधा ने बताया कि मीरामार्ग के श्री आदिनाथ भवन पर मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में शनिवार को प्रातः 8.15 बजे श्री पार्श्वनाथ कथा का संगीतमय आयोजन आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की पूजा एवं मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होंगे। मुनि श्री की आहारचर्या प्रातः 9:40 बजे होगी। दोपहर में 3.00 बजे शास्त्र चर्चा होगी। गुरुभक्ति एवं आरती सांय 6:30 बजे एवं वैयावृत्ति रात्रि 8:30 बजे होगी। संयुक्त मंत्री मनोज जैन ने बताया कि शनिवार 10 अगस्त को जैन धर्म के 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का जन्म व तप कल्याणक दिवस मनाया जाएगा।

जैन धर्म के 23वे तीर्थंकर पार्श्वनाथ के निर्वाणोत्सव पर विशेष

उपसर्ग विजेता पार्श्वनाथ के ऊपर फण धारी सर्प उपसर्ग का प्रतीक

जग्गा की बावड़ी जयपुर के पार्श्वनाथ

मोक्ष सप्तमी के रूप में मनाया जाता है तीर्थंकर पार्श्वनाथ का निर्वाणोत्सव

जिन मंदिरों में भगवान पार्श्वनाथ के जिन बिम्ब के ऊपर प्रायः फण फैलाया हुआ सर्प दृष्टिगोचर होता है, जो उनपर हुए घोर उपसर्ग का प्रतीक है। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर में से अवसर्पणि काल में घोर उपसर्ग को सहन करने वाले तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ स्वामि कहे गये है। वर्तमान काल में सबसे अधिक जिनबिम्ब तथा जिन मन्दिर भगवान पार्श्वनाथ के दिखाई देते हैं। पार्श्वनाथ भगवान को संकट मोचक पार्श्व भी कहा जाता है। इनके निर्वाणोत्सव को मोक्ष सप्तमी के रूप में मनाया जाता है।

दो भाई - कमठ और मरुभूति

भगवान पार्श्वनाथ पर कमठ नामक जीव द्वारा घोर उपसर्ग किए जाने बाबत शास्त्रों में लिखा है । राजा अरविन्द के दो मंत्री कमठ और मरुभूति थे। कमठ बड़ा भाई अत्यन्त दुष्ट प्रकृति का, दुर्व्यवहारी था, जबकि छोटा भाई मरुभूति सज्जन और सद्व्यवहारी था। एक दिन मरुभूति को राज्य कार्य से नगर से बाहर जाना पढ़ा तब कमठ ने छोटे भाई की पत्नी के साथ दुव्यवहार करना चाहा। जब राजा को यह बात ज्ञात हुई तो उसने कमठ को देश निकाला दे दिया, अतः वह तापसी बनकर जंगल में रहने लगा और

भगवान पार्श्वनाथ की 101 इंच ऊंची कसौटी के एक ही पत्थर से निर्मित खड़गासन प्रतिमा पार्श्वनाथ मंदिर सोनियान जयपुर।

कुतप करने लगा, मरुभूति के लौट आने पर, सब घटना ज्ञात होने पर भातृ-प्रेम के कारण वह कमठ के पास गया और पैर पड़ते हुए क्षमा-याचना पूर्वक घर चलने की प्रार्थना करने लगा। तब कमठ ने और अत्यधिक क्रोधित हो उस पर शिला पटक दी, जिससे मरुभूति दुध्यान पूर्वक मरण कर कई भव से गुजरने के उपरांत सोलहकारण भावनाओं का चिंतन कर तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। तब सिंह के द्वारा भक्षण किये जाने पर समाधि पूर्वक मरण कर आनत स्वर्ग में इन्द्र हुआ ।

वामा माता के गर्भ में तीर्थंकर का जीव

जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र के काशी देश स्थित वाराणसी नगरी में राजा अश्वसेन राज्य करते थे उनकी महारानी वामादेवी ने आनत स्वर्ग के इन्द्र को आज से करीब तीन हजार वर्ष पूर्व पौष कृष्णा एकादशी को तीर्थंकर सुत के रूप में जन्म दिया। और यह जीव स्वर्ग से च्युत हो, श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर बना।और उधर कमठ का जीव आगे चलकर शम्बर नामक देव बना ।

बालक पार्श्व और धरणेन्द्र पद्मावती

इधर सोलह वर्ष की अवस्था में बालक पार्श्व नगर के बाहर वन बिहार करते हुए अपने नाना महीपाल के पास पहुँचे। वहाँ पंचाग्नि नामक साधु तप के लिए लकड़ी फाड़ रहा था, इन्होंने उसे रोका और बताया कि लकड़ी में नागयुगल है। वह नहीं माना और क्रोध से युक्त होकर उसने वह लकड़ी काट डाली। उसमें जो नागयुगल था वह कट गया। मरणासन्न सर्पयुगल को इन्होंने संबोधित किया जिससे शान्तचित हो नाग युगल अगले भव में धरणेन्द्र और पद्मावती हुए।

तीर्थंकर पर उपसर्ग और निवारण

इधर जब पार्श्व प्रभु तेला का नियम लेकर देवदारु वृक्ष के नीचे ध्यानावस्था में थे तब पूर्व जन्म के वैमनस्य भाव लिए कमठ के जीव शम्बर नामक देव ने सात दिन तक इन पर विभिन्न प्रकार के घोर उपसर्ग किये । उसी समय उस नाग युगल के जीव धरणेन्द्र और पदमावती ने आकर अपने पर किए उपकार स्वरूप पार्श्व नाथ के उपसर्ग का निवारण किया। इसी कारण भगवान पार्श्व का प्रतीक चिन्ह सर्प है तथा जिन बिम्ब के ऊपर फण फैलाया हुआ नाग दृष्टिगोचर होता है।

अष्ट कर्मों को नाश कर पाया निर्वाण

इसके बाद चैत्र कृष्णा त्रयोदशी के दिन प्रातःकाल घातिया कर्म नष्ट हो जाने से प्रभु को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ तथा श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातः बेला में अष्टकर्मों को नाश कर स्वर्ण भद्र कूट सम्मेद शिखर से निर्वाण को प्राप्त किया जहां मोक्ष कल्याण के दिन लाखों श्रद्धालु दर्शनार्थ पहुंचते हैं।

मोक्ष सप्तमी महोत्सव

मोक्ष सप्तमी अर्थाता निर्वाणोत्सव के दिन मंदिरों में भगवान पार्श्वनाथ की विशेष पूजा-अर्चना, शांतिधारा कर निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है। जब किसी को पूर्णतया मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है तो उसके जीवन का अर्थ सार्थक हो जाता है। इस मान्यता के साथ इस दिन को मोक्ष सप्तमी के रूप में मनाते हैं। इस दिन खास तौर पर बालिकाएं उपवास करती है, दिन भर पूजन, स्वाध्याय, मनन-चिंतन, सामूहिक प्रतिक्रमण करते हुए संध्या के समय देव-शास्त्र-गुरु की सामूहिक भक्ति कर आत्म चिंतन कर मनाती है मोक्ष सप्तमी का विशेष दिन। इधर सन्तों के सानिध्य में थडी मार्केट , मीरा मार्ग , कीर्ति नगर , वरुण पथ , बरकत नगर , दुर्गा पुरा में एवं पार्श्वनाथ मंदिर सोनियांन ,जनकपुरी , चूल गिरी , जग्गा की बावड़ी , सहित कई मंदिरों में विशेष कार्यक्रम होंगे ।

पदम जैन बिलाला
जनकपुरी - ज्योतिनगर , जयपुर

जानिए अजवाइन में ऐसा क्या है कि दोपहर में लेनी चाहिए लेकिन रात को नहीं...

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय
आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान
विधानसभा,जयपुर।
9828011871

कौन कौन सी चीजें हैं जो हमारे वात पित्त और कफ तीनों को कंट्रोल कर सकती हैं ये तीनों सम भाग में रहे तो अच्छा है तो बागभट्ट जी कहते हैं कि रसोई से बाहर जाने की जरुरत नही है सब वहीं है बागभट्ट जी कहते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा औषधि केंद्र हमारा रसोई घर ही हैं जिसे हम रसोई में मसाला कहते हैं दरअसल वो औषधीयां ही हैं. मसाला शब्द हमारे देश का नही हैं ये एक अरबिक शब्द है हमारे देश का शब्द हैं औषधि हमारे देश के जितने भी दसवीं शताब्दी से पहले के पुराने शास्त्र हैं कहीं भी मसाला शब्द का प्रयोग नही हैं सभी जगह औषधि का यूज हुवा है. मुगलों के राज्य के बाद के शास्त्रों में मसाला शब्द का प्रयोग हुवा हैं सब जगह औषधि शब्द है जैसे जीरा औषधि धनिया औषधि। ये सभी रसोई की जो भी औषधियां हैं. ये सब चिकित्सा के लिए है. हमारे पुराने समय की दादी नानी हैं जिन्होंने अपनी बेटी पोतियों को सब्जी में ये ओषधियों का यूज करना सिखाया कि कितना जीरा डालेगा, कितना हिंग डलेगा और दूसरी औषधियां कितनी डलेंगी। वो सभी वैज्ञानिक और चिकित्सक थीं वे जानती थीं कि हर रोज हमारे शरीर में वात पित्त और कफ की मात्रा सम विषम होती रहती है जिस समय जो प्रकोप(वात, पित्त, कफ) बढता है उस समय की सब्जी में वो ही औषधि डाली जाती है जिससे की वह प्रकोप को कंट्रोल कर सके जैसे की दोपहर की सब्जी जो बनती है उसमें आजवाइन जरुर डाली जाती है और वोही सब्जी अगर रात को भी बनाई जाए तो उसमें आजवाइन नही डाली जाती क्योंकि आजवाइन पित्त नाशक है और दोपहर को पित्त भड़कता है जो की आजवाइन से कंट्रोल हो

जाता है इसीलिए दोपहर को दहीं और मठठे में आजवाइन डाली जाती है। अंग्रेजों के आने के बाद हम उनके गुलाम हो गये जब हम जी डी पी का कैलकुलेशन करते हैं तो अंग्रेजों के तरीके से जब चोरी और भ्रस्टाचार बढ़ जाये तो पुलिस का खर्च बढ़ जाता है और हमारे देश की जी डी पी बढ़ जाती है लेकिन महिलाओं द्वारा रसोई में किये गये काम की तुलना कोई सरकार नही करती क्योंकि अंग्रेजों के यहाँ महिलाओं द्वारा किये गये काम को कोई महत्त्व नही दिया जाता। 2000 साल तक युरोप में महिलाओं द्वारा किये गये काम के बदले उन्हें पुरूषों से दो गुना कम वेतन दिया जाता था आज भी कई देशों में ऐसा ही है क्योंकि वो लोग महिलाओं में आत्मा ही नही मानते महिला कुछ करे तो बेकार उर उनके यहाँ से यही सोच हमारे देश में आ गयी अंग्रेजो के 200 साल के समय में हमारे देश के सब दिमाग खत्म हो गये सोचना विचारना बंद हो गया और महिलाओं के काम को महत्त्व देना बंद कर दिया जो कैलकुलेशन वो ले आए उसे ही हम सबने मान लिया लेकिन महिलाएं जो कर रही हैं वो किसी डॉक्टर से कम नही हैं बस फर्क इतना है की डॉक्टर को ये जानकारी देने के लिए हम फीस दे रहे है और दादी नानी फोकट में ये एडवाइस दे रही है की धनिया खाओ जीरा खाओ आजवाइन खाओ आपके पेट की गैस खत्म हो जाएगी साढे तीन हजार साल से महिलाएं आजवाइन का यूज कर रही हैं कि गैस खत्म हो जाएगी एसिडिटी खत्म हो जाएगी लेकिन कोई महत्त्व नही दिया जा रहा अगर आप सब्जी में आजवाइन नही डालते तो खाना खाने के बाद थोडा ले लें अगर आजवाइन सही नही बैठती तो उसे काले नमक के साथ लें उससे बैलेंस बैठ जायेगा और 3 दिन में आपकी गैस खत्म हो जाएगी बागभट्ट जी कहते हैं की हमारी रसोई में घी के बाद जो पित्त नाशक है वो है आजवाइन।

गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर जी की पूण्यतिथि के अवसर पर श्रध्दांजलि स्वरूप ओम प्रकाश सैनी के निर्देशन में नाटक चोर पुराण का मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

30 दिवसीय प्रस्तुति परक ''नाटकवाला अभिनयशाला'' में तैयार नाटक 'चोर पुराण' का मंचन 8 अगस्त कों रविंद्र मंच पर किया गया । प्रस्तुत नाटक प्रयोगात्मक शैली में रचा गया है, बिना सेट के कलाकारों ने नाटक कों संगीतमय एवं नृत्य से नाटक कों और भी खूबसूरत बना दिया है। नाट्य प्रस्तुति में जैसा की नाटक का शीर्षक है 'चोर पुराण' जिसमें दिखाया गया है की हर व्यक्ति एक चोर है, दर्शको से लेकर कलाकारों तक सभी। सभागार में उपस्थित व्यक्ति से लेकर समाज के हर हिस्से या तबके से जुड़ा हर व्यक्ति सभी कुछ न कुछ चुराने की होड़ में इन दिनों न जाने क्या-क्या कर रहे है। यह नाटक सामाजिक और राजनीति में फैले भ्रष्टाचार के सिस्टम पर व्यंग्य है । कहानी में बताया है की एक व्यक्ति जब जन्म लेता है तो माता पिता चाहते है की उनका बेटा भी पढ़ लिख के बड़ा अफसर बने अच्छी नौकरी लगे और वो बेटा जाने अनजाने बन जाता है एक चोर जो खुद नही जानता की कैसे वो बन गया चोर। नाटक चोर पुराण के अनुसार समाज में वे सभी चोर है जो ईमानदारी का लबादा ओढ़कर दिन दहाड़े चोरी करते है ।फिर भी वो पकड़े नहीं जाते है, नाटक में बहुत से चोरों की और ईशारा किया गया है । चोरों की चोरी की आदत पर सहानुभूति पूर्वक उनका भी पक्ष रखा गया है कि उनकी क्या मजबूरी है चोरी करने की जो आगे जाकर मजबूरी से उनकी आदत बन जाती है। इसी के इर्द नाटक कटाक्ष के साथ उतना ही मनोरंजक

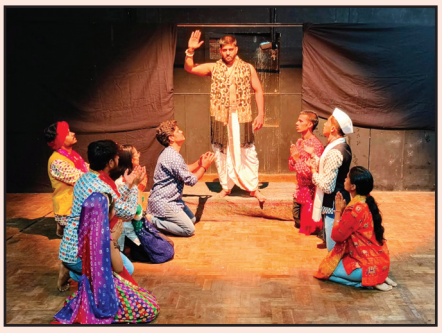

भी है। निर्देशक ओम प्रकाश सैनी ने बताया की यह नाटक रविंद्र नाथ टैगोर जी के पुण्यतिथि के अवसर में 30 दिनों की अभिनय नाट्य कार्यशाला में तैयार किया गया हैं जिसमें अधिकतर कलाकार नये है और एक अनुभवी कलाकार प्रशिक्षक विवेक माथुर ने इसमें मुख्य चोर की भूमिका निभाकर अभिनय तो किया ही साथ ही ही उनके बीच रहकर नये कलाकारों के लिये सहज माहौल तैयार कर और उनसे प्रतिस्पर्धा कों भावना से कलाकारों ने प्रेरणा लेकर की उनके साथ हमे भी अच्छा प्रदर्शन करना है इसका नतीजा नाटक में सजग रूप से देखने कों मिलता है, की नये कलाकारों के प्रदर्शन ने नाटक कों उच्च स्तर का बना दिया हैं । और इस नाटक के मंचन अब बड़े स्तर पर पुरे देश में कहीं भी किया जा सकता है। ओम प्रकाश इसके कम से कम 10 प्रदर्शन विभिन्न गाँव और शहरों के मंच पर करेंगे जिसमें एक प्रदर्शन नाटकवाला कला मंच आमेर में भी किया जायेगा।

सुबोध महाविद्यालय के छात्र-छात्रा का स्वतंत्रता दिवस समारोह शिविर नई दिल्ली में हुआ चयन

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुबोध महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो के बी शर्मा ने बताया कि सुबोध महाविद्यालय के प्रियंका कासनियां एवं रोहन रार का चयन स्वतंत्रता दिवस समारोह शिविर, नई दिल्ली में क्षेत्रीय निदेशालय, राजस्थान द्वारा चयन किया गया है। क्षेत्रीय निदेशालय राष्ट्रीय सेवा योजना जयपुर के क्षेत्रीय निदेशक एसपी भटनागर ने बताया कि भारत सरकार द्वारा आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में राजस्थान राज्य के विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं विभिन्न विद्यालयों से 10 स्वयंसेवक एवं 10 स्वयंसेविका का और एक कार्यक्रम अधिकारी का चयन किया गया है। राष्ट्रीय सेवा योजना के इन स्वयंसेवक का चयन मेरी माटी मेरा देश, हर घर तिरंगा,

माटी को नमन वीरों को वंदन, वृक्षारोपण, रक्तदान जैसे विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम के अंतर्गत जागरूकता पैदा करने में इन स्वयंसेवकों ने विशेष योगदान दिया है। यह दल 13 से 15 अगस्त 2024 तक नई दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेगा। इस कार्यक्रम के दौरान इन्हें प्रधानमंत्री संग्रहालय, युद्ध स्मारक एवं 15 अगस्त को लाल किले पर होने वाले कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लेने का मौका मिलेगा। इस समारोह में संपूर्ण भारतवर्ष से राष्ट्रीय सेवा योजना के कुल 400 स्वयंसेवक भाग लेंगे।

वेद ज्ञान

प्रेम प्रवाह

प्रेम बहती नदी है, बंद तालाब नहीं। इसे परमार्थ के महानद में मिलने दें। यदि प्रेम नदी न हो तो जीवन को शुष्क मरुस्थल बनते देर नहीं लगती। प्रेम बहती नदी है, बंद तालाब नहीं। इसे परमार्थ के महानद में मिलने दें। यदि प्रेम नदी न हो तो जीवन को शुष्क मरुस्थल बनते देर नहीं लगती। स्वार्थ के संपुट में बंद प्रेम महज प्रेमाभास है। प्रेम ऊपर चढ़े तो भक्ति है और नीचे गिरे तो आसक्ति। प्रेम रागात्मक है, वासनात्मक नहीं। हमारा सारा प्रेम शुभ के लिए होना चाहिए। हम व्यक्ति से प्रेम नहीं करते, उसमें निहित आदर्श से प्रेम करते हैं। पति या पत्नी शरीर से प्रेम नहीं करते, उसमें निहित आत्मा से प्रेम करते हैं। परमात्मा को धर्मालयों में बंद न करें। उसे सर्वत्र प्रेम के रूप में खिलने दें। बंद फूल मुरझा जाता है। उसे उपवन की खुली हवा में खिलखिलाने दें। यदि आप जीवन में ऊंचाई को नापना चाहते हैं तो उपवन में खिले फूलों को देखें, जो खिलता है दूसरों को सुख देने के लिए और स्वयं मुरझाने के लिए। फूल कंटीली झाड़ी में भी मुस्कराता रहता है। क्या आप ऐसा कर सकते हैं? साधु की साधुता में ही प्रेम को मत देखें, बल्कि दुष्ट की दुष्टता में भी प्रेम को निहारने की साधना करें। जब तक बंदा और खुदा के बीच खुदी का पर्दा है, तब तक खुदा का दीदार नहीं। प्रेम निश्छल होना चाहिए। वह चाहे सांसारिक प्रेम हो या परमार्थिक प्रेम। प्रेम में प्रतिदान की तनिक भी गुंजाइश नहीं है। प्रेम के आगे मुक्ति भी निरादृत है। प्रेम-प्रेम के लिए होना चाहिए। यह भाव भी नहीं होना चाहिए कि वह प्रेम कर रहा है। प्रेम में केवल देना ही देना है, लेना कुछ भी नहीं। प्रेम को तिजारत न बनने दें। प्रार्थना का असली मंतव्य परमात्मा से किसी प्रकार की याचना नहीं है। अहंकार वह बाधक तत्व है, जो दैवी प्रेम को मनुष्य के भीतर उतरने ही नहीं देता। परमात्मा प्रेम है। उसे निश्छल प्रेम ही चाहिए। सूर्य प्रेमवश जीवनदायिनी किरणें विसर्जित करता है। मेघ भेद-भाव के बगैर सभी के खेतों में बरसता है। नदी प्यास मिटाने के लिए निरंतर बहती है। वृक्ष, फल लुटाने के लिए झुक जाते हैं। हवा जीवन देने के लिए बहती ही रहती है। इस प्रेम के बदले वे हमसे कुछ नहीं चाहते, परंतु हम लोग भ्रांत सुख की खोज में निर्ममता से इन सब का दोहन करते रहते हैं। इस संकट से बचने के लिए हमें अपने को सब के साथ प्रेम के बंधन में बंधकर चलना होगा, अन्यथा हमारा ही अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

संपादकीय

सुप्रीम कोर्ट की हिदायत...

पिछले कुछ वर्षों से धनशोधन के आरोपों के तहत प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी और सीबीआई की ओर से छापे या गिरफ्तारियों के मामले सुर्खियों में रहे हैं। इसके अलावा, ऐसे कई मामलों में होने वाली कार्रवाइयों की जैसी प्रकृति देखी गई, उसमें अब ईडी को विपक्ष की आवाज को दबाने का औजार बनाए जाने के आरोप भी लगने लगे हैं। इस मसले पर खुद सुप्रीम कोर्ट की ओर से भी प्रवर्तन निदेशालय को एहतियात बरतने या हिदायत देने की कोशिश हो चुकी है। मगर आज भी ऐसे आरोपों में साक्ष्यों को लेकर शायद गंभीरता नहीं आ पाई है या फिर इसमें एक परिपक्व दृष्टि का अभाव दिखता है। शायद यही वजह है कि बुधवार को एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट ने धनशोधन के मामलों में दोषसिद्धि की बहुत कम दर का हवाला देते हुए ईडी से अभियोजन और साक्ष्य की गुणवत्ता पर ध्यान देने को कहा। यह छिपा नहीं है कि बीते कुछ समय से धनशोधन के आरोपों में छापा या फिर गिरफ्तारी के लगातार मामले सामने आ रहे हैं, मगर उनमें से बहुत कम मामलों में आरोप साबित हो रहे हैं। इसी के मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने ईडी को दोषसिद्धि की दर को बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक जांच करने की सलाह दी। दरअसल, पहले भी धनशोधन के आरोप पर होने वाली कार्रवाइयों को लेकर कई तरह के सवाल उठते रहे हैं और बिना मजबूत साक्ष्य के आधार पर गिरफ्तारी के मामलों की विश्वसनीयता कसौटी पर रही है। इसके बावजूद लगातार इस तरह के आरोप में छापे या गिरफ्तारी के मामले सामने आए। हकीकत यह है कि धनशोधन के मामले में गैरकानूनी गतिविधियों के आरोप के साथ ईडी ने कार्रवाई करने में जितनी हड़बड़ी दिखाई, उतनी ही शिद्दत से आरोपों को साबित करने के लिए साक्ष्य पेश नहीं किए। नतीजतन, ऐसे मामलों में दोषसिद्धि की दर काफी कम रही। गौरतलब है कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने मंगलवार को लोकसभा में यह जानकारी दी कि ईडी ने सन 2014 से लेकर 2024 के बीच धनशोधन निवारण अधिनियम यानी पीएमएलए के तहत कुल पांच हजार दो सौ सत्तानबे मामले दर्ज किए, लेकिन इनमें से सिर्फ चालीस आरोपों में ही दोष सिद्ध हो सका। सवाल है कि इतनी बड़ी तादाद में दर्ज होने वाले मामलों की बुनियाद में सबूतों का आधार कितना ठोस था और किन वजहों से प्रवर्तन निदेशालय पर पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर कार्रवाई करने के आरोप लगते हैं! अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि शीर्ष अदालत को यह कहने की जरूरत पड़ी कि जिन मामलों में प्रथम दृष्टया मामला बनता है, प्रवर्तन निदेशालय को उन्हें अदालत में साबित करने की जरूरत है। अदालत की यह टिप्पणी यही दर्शाती है कि जिस तेजी से धनशोधन के मामलों में ईडी ने कार्रवाई किए, उसे साबित करने को लेकर उसके भीतर कोई गंभीरता नहीं दिखी। इसकी क्या वजहें हो सकती हैं?

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

कौशल विकास की चुनौती

बजट पेश होने के बाद उसके प्रस्तावों पर अमल की दिशा में प्रयास भी शुरू हो गए हैं। इस कड़ी में सभी की निगाहें रोजगार सृजन की उन महत्वाकांक्षी योजनाओं पर टिकी हैं, जिन्हें हालिया बजट का सबसे विशिष्ट पहलू माना जा रहा है। कौशल, नवाचार और रोजगार पर विशेष ध्यान देते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट में विशेष प्राविधान किए हैं। इसमें इंटर्नशिप योजना को खासी चर्चा भी मिली है। इससे न केवल रोजगार के आकांक्षियों के हितों की पूर्ति होगी, बल्कि उद्योगों को भी अपने अनुकूल कौशल से लैस लोग मिलेंगे। इससे न सिर्फ भारत की वैश्विक आपूर्ति शृंखला मजबूत होगी, बल्कि निवेश संभावनाएं भी बढ़ेंगी। इससे सरकार की यह मंशा भी प्रकट हुई है कि अगले पांच वर्षों में वह रोजगार, कौशल और एमएसएमई पर अपना ध्यान केंद्रित करेगी। भारतीय अर्थव्यवस्था की संभावनाओं को भुनाने की राह में कार्यशील आबादी में महिलाओं की अपेक्षित भागीदारी न होने का संज्ञान भी सरकार ने लिया है। इसके लिए कामकाजी आबादी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए कार्यस्थल के निकट महिला हास्टलों और शिशु देखभाल गृहों की स्थापना की जाएगी। इसके साथ ही महिला श्रमिकों के कौशल को बढ़ाने के लिए विशिष्ट कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर भी फोकस किया जाएगा। आर्थिक सर्वेक्षण में भी उल्लेख है कि देश में बढ़ते कार्यबल के समायोजन के लिए गैर-कृषि क्षेत्र में 2030 तक सालाना औसतन 78.5 लाख नौकरियां सृजित करनी होंगी। इसीलिए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट में युवाओं को सशक्त बनाने के लिए बहुआयामी रणनीति बनाई। बजट में युवाओं और रोजगार पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा, रोजगार और कौशल विकास के लिए 1.48 लाख करोड़ रुपये आवंटित हुए हैं। कुल मिलाकर, पांच साल की अवधि में 2 लाख करोड़ रुपये के केंद्रीय परिव्यय के साथ 4.1 करोड़ युवाओं को शिक्षित, कौशल और रोजगार प्रदान करने के लिए कई योजनाएं बनाई हैं। विनिर्माण क्षेत्र में भी अतिरिक्त रोजगार सृजन के लिए बजट में प्रविधान है कि पहली बार रोजगार पाने वाले युवाओं को शुरूआती चार वर्षों में ईपीएफओ में योगदान के लिए नियोक्ता और कर्मचारी दोनों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। इससे 30 लाख युवाओं को लाभ पहुंचने की संभावना है। नियोक्ताओं को सहायता देते हुए यह उपाय भी किया गया है कि सभी क्षेत्रों में प्रत्येक अतिरिक्त रोजगार के संबंध में नियोक्ता के ईपीएफओ में अंशदान के लिए उन्हें दो वर्षों तक प्रति माह 3,000 रुपये तक की प्रतिपूर्ति की जाएगी। इस योजना का उद्देश्य 50 लाख अतिरिक्त लोगों को रोजगार के लिए प्रोत्साहित करना है। वित्त मंत्री की यह पहल औपचारिक रोजगार सृजन की दिशा में स्वागतयोग्य कदम है, जिससे सैद्धांतिक शिक्षा और व्यावहारिकता के बीच की खाई पाटने में मदद मिलेगी। इससे अधिक स्नातकों को नौकरी के व्यापक अवसर उपलब्ध होंगे। भारत में रोजगार की नहीं, बल्कि कुशल श्रमिकों की कमी है। बढ़ती श्रमशक्ति और कुशल श्रमिकों की मांग एवं आपूर्ति में संतुलन की दृष्टि से पांच वर्षों में देश की 500 दिग्गज कंपनियों द्वारा एक करोड़ युवाओं को इंटर्नशिप प्रदान करना एक बाजी पलटने वाली योजना सिद्ध हो सकती है, लेकिन तभी जब कंपनियां इस योजना में रुचि दिखाएं।

जैन धर्म के 22वे तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का जन्म व तप कल्याणक दिवस आज

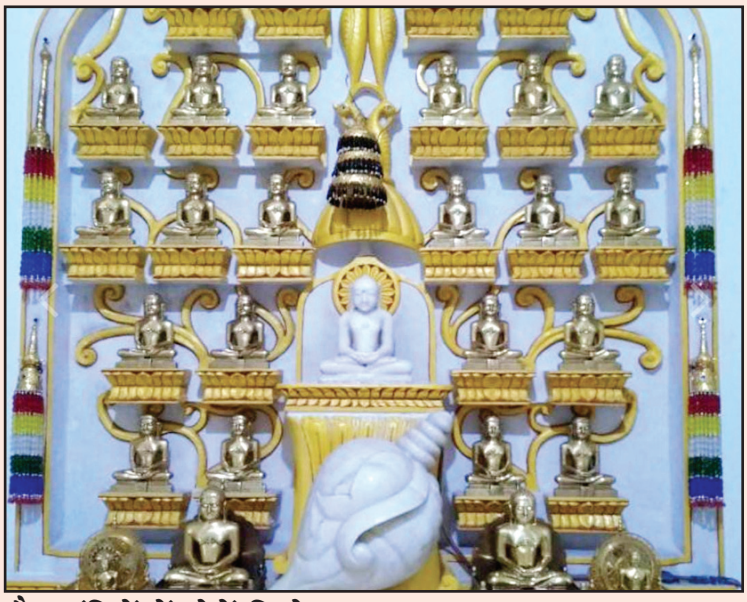

जैन मंदिरों में होगें विशेष धार्मिक आयोजन

जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का 2876वां निर्वाणोत्सव रविवार को

चातुर्मास स्थलों पर सजेगी शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी की झांकी

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 22 वे तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का जन्म व तप कल्याणक दिवस शनिवार, 10 अगस्त को तथा जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का 2876 वां निवाणोत्सव रविवार, 11 अगस्त को जैन धर्मावलंबियों द्वारा भक्ति भाव से मनाया जाएगा ।इस मौके पर शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन होंगे। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' के अनुसार शनिवार, 10 अगस्त को मंदिरों में प्रातः भगवान नेमिनाथ के मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक, शांतिधारा के बाद विशेष पूजा अर्चना की जाएगी। पूजा के दौरान भगवान नेमिनाथ का जन्म व तप कल्याणक श्लोक का उच्चारण करते हुए अर्घ्य चढाये जाएंगे। जैन के मुताबिक बापूगॉव स्थित श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र छोटा गिरनार, आगरा रोड पर श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी, बोरडी का रास्ता स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर लश्कर, शास्त्री नगर,जनकपुरी ईमलीवाला फाटक, सांवला जी आमेर, बाहरली नसियां आमेर, न्यू लाइट कालोनी, नेमी सागर कॉलोनी, दिगंबर जैन मंदिरों सहित कई मंदिरों में विशेष आयोजन होगें। जैन के मुताबिक रविवार, 11 अगस्त को जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का 2876 वां निर्वाणोत्सव मनाया जायेगा। इस मौके पर मंदिरों में मंत्रोच्चार के साथ मोक्ष का प्रतीक निर्वाण लाडू चढाया जावेगा। श्री जैन ने बताया कि जैन धर्म के अनुसार इस पर्व को मुकुट सप्तमी या मोक्ष सप्तमी भी कहते हैं। इस दिन कुंवारी कन्याएं मोक्ष सप्तमी का उपवास करती है। शहर में चल रहे चातुर्मास स्थलों पर शाश्वत सिद्ध क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की झांकी सजाई जाकर भगवान के मोक्ष स्थल स्वर्ण भद्र कूट पर निर्वाण लाडू चढाया जावेगा ।कई मंदिरों में श्री पार्श्वनाथ विधान पूजा का संगीतमय आयोजन किया जाएगा। जैन के मुताबिक मानसरोवर के वरुण पथ स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य शशांक सागर महाराज, प्रतापनगर में उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज, मीरामार्ग के आदिनाथ भवन पर मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ, कीर्तिनगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में मुनि समत्व सागर महाराज, थडी मार्केट के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में उपाध्याय वृषभानन्द महाराज ससंघ, बरकतनगर के श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में मुनि अर्चित सागर महाराज, पदमपुरा के श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र में मुनि महिमा सागर महाराज ससंघ, दुर्गापुरा के श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में मुनि पावन सागर महाराज, दहमीकलां के श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य नवीन नन्दी महाराज,बीलवा के नांगल्या स्थित विमल परिसर में गणिनी आर्यिका नंग मति माताजी के सानिध्य में विशेष आयोजन किया जाएगा। नटाटा आमेर के श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में अध्यक्ष महेन्द्र साह आबूजीवाले, महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' के नेतृत्व में निर्वाणोत्सव मनाया जाकर निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा। आगरा रोड पर श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र चूलगिरी पर विशेष आयोजन होंगे।

पूज्य मुनिश्री 108 पावनसागर जी महाराज के सम्यग्दर्शन के आठ अंग के प्रभावना अंग पर प्रवचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी दुर्गापुरा जयपुर में प्रतिदिन प्रातः 8.30 बजे परम पूज्य मुनिश्री 108 पावनसागर जी महाराज के सम्यग्दर्शन के आठ अंग पर प्रवचन हो रहे हैं। गुरुवार दिनांक 08.08.2024 को परम पूज्य मुनिश्री 108 पावनसागर जी महाराज एवं मुनिश्री 108 सुभद्र सागर जी महाराज को जिनवाणी श्रीमती लक्ष्मी देवी एवं श्रीमती सुमति अजमेरा ने भेंट की तथा मंगलाचरण श्रीमती गुणमाला काला ने किया। श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी ट्रस्ट दुर्गापुरा के अध्यक्ष प्रकाश चन्द चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र काला ने बताया कि मुनिश्री के प्रभावना अंग पर प्रवचन हुए मुनि संघ के सानिध्य में रविवार दिनांक 11.08.2024 को मोक्ष सप्तमी के पावन दिवस पर प्रातः 8 बजे से भगवान पार्श्वनाथ जी की पूजा कर निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा।

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के प्रवचन

संसार में कोई कार्य असम्भव नहीं है..
किसी के होने ना होने से कोई फर्क नहीं पड़ता..!
कोई भी कार्य, कोई भी कर सकता है, और किया भी है लोगों ने..

बस इसके बीच का सफर खूबसूरत, मनभावन, मीठी यादों से भरा और प्रेरणास्पद होना चाहिए..! ये सच है - सबको सब कुछ नहीं मिलता। और सभी के जीवन में कुछ अच्छा तो कुछ बुरा अनुभव जरूर जुड़ा होता है। एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि सुख, आनंद, हँसी, खुशी को दुःख, परेशानी, अशान्ति और आंसुओं से ज्यादा रखने की कोशिश करते रहना चाहिए। कभी भी आंसुओं और दुःख को मन पर हावी नहीं होने देना चाहिए। ये भी सच है - आप सबको खुश नहीं कर सकते। पड़ोसी को खुश रखने से ज्यादा कठिन काम है अपनों को खुश रखना। आप और आपके कार्यों से दुनिया खुश हो सकती है लेकिन आपके अपने कभी खुश नहीं हो सकते। इसलिए निन्दा, आलोचना, अपनों की छोटी, ओछी बातों को, अपने अन्तःकरण और मन की भूमि पर ना जमने दें। आप अपने कार्य को अपनी मस्ती, आनंद, उत्साह और जुनून के साथ करें और करते रहें। गुस्सा, द्वेष, ईर्ष्या को मन के आंगन में प्रवेश ना होने दें। अपने कार्य और कर्तव्य के प्रति जागरूक रहें। अपने कार्य की दिशा और लक्ष्य की ओर वर्धमान रहें। बस यही जीवन जीने के सूत्र हैं, और सम्यक समीचीन तरीका भी। अन्यथा आज के अपने लोग --

ना जीने देंगे ना मरने देंगे,
ना कुछ करेंगे ना करने देंगे,
ना खायेंगे ना खाने देंगे,
ना चलेंगे ना चलने देंगे,
ना आयेंगे ना आने देंगे,
ना रहेंगे ना रहने देंगे...!

नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

।। श्री चन्द्रप्रभाय नमः ।।

मूलनायक श्री 1008
चन्द्रप्रभ भगवान

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी दुर्गापुरा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सन्त शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के
परम प्रभावक शिष्य

प.पू. मुनि श्री 108 पावनसागर जी महाराज
(जंगल वाले बाबा)
एवं
प.पू. मुनि श्री 108 सुभद्र सागर जी महाराज

ससंघ के सान्निध्य में

प.पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज

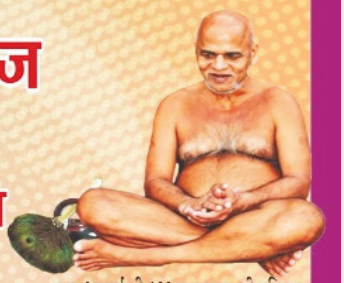

प.पू. आचार्य श्री 108 समयसागर जी मुनिराज

मोक्ष सप्तमी महोत्सव

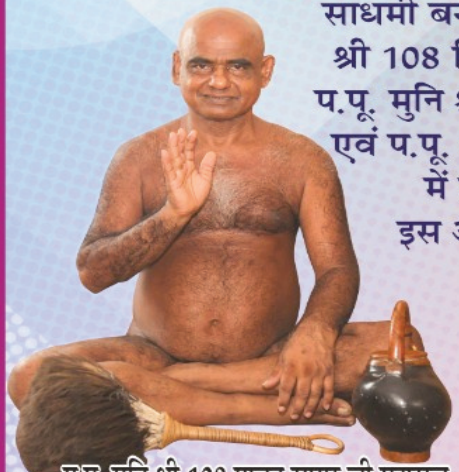

प.पू. मुनि श्री 108 पावन सागर जी महाराज

साधर्मी बन्धुओं से निवेदन है कि सन्त शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य प.पू. मुनि श्री 108 पावनसागर जी महाराज (जंगल वाले बाबा) एवं प.पू. मुनि श्री 108 सुभद्र सागर जी महाराज के सान्निध्य में मोक्ष सप्तमी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर समाज बन्धुओं के साथ विद्यासागर पाठशाला के बच्चे भी सामूहिक पूजा में सम्मिलित होंगे। बोली द्वारा चयनित परिवारों द्वारा तीनों वेदियों पर निर्वाण लाडू चढ़ाया जायेगा। कृपया अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

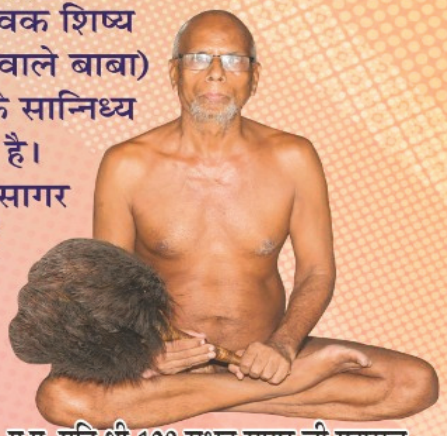

प.पू. मुनि श्री 108 सुभद्र सागर जी महाराज

रविवार, 11 अगस्त 2024

मोक्ष सप्तमी महोत्सव

प्रातः 6.30 बजे - अभिषेक, शांतिधारा
प्रातः 8.00 बजे - नित्य पूजा एवं भगवान पार्श्वनाथ जी पूजा
मुनिश्री के प्रवचन एवं तीनों वेदियों में निर्वाण लाडू चढ़ाया जायेगा।

संयोजकः
कमल छाबड़ा-डॉ. वन्दना जैन

आयोजकः
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चन्द्रप्रभजी) ट्रस्ट, दुर्गापुरा

निवेदकः श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु महिला मण्डल, दुर्गापुरा
एवं सकल दिगम्बर जैन समाज दुर्गापुरा, जयपुर

Mob.: 93525-84197, 93143-81608, 88904-29428, 88520-00035

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी , अर्हं ध्यान योगप्रणेता,

मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

ससंघ के पावन सान्निध्य में

शास्वत तीर्थराज

सम्मेद शिखर जी

सजीव रचना

श्री पार्श्वनाथ मोक्षकल्याणक महोत्सव

रविवार, 11 अगस्त 2024

प्रात: 6.30 बजे - सम्मेद शिखर रचना पर श्री पार्श्वनाथ विधान

प्रात: 8.15 बजे - प्रवचन एवं निर्वाण लाडू

स्थान : आदिनाथ भवन, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी , अर्हं ध्यान योगप्रणेता, मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

सम्मेद शिखर रचना पुण्यार्जक

श्री कुशल जी-मधु जी ठोलिया
जयपुर (राज.)

धर्मप्रेमी महानुभावों,

सादर जय जिनेन्द्र,

मोक्ष सप्तमी (भगवान 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान मोक्ष कल्याणक) के पावन अवसर पर तीर्थराज शास्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी की सजीव रचना पर भगवान पार्श्वनाथ की टोंक निर्वाण लाडू चढाकर पुण्यार्जन करें।

कार्यक्रम में आप सपरिवार पधारकर पुण्यार्जन करें।

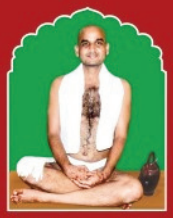
परम पूज्य क्षुल्लक श्री 105 अनुनयसागर जी महाराज

परम पूज्य क्षुल्लक श्री 105 सविनयसागर जी महाराज

परम पूज्य क्षुल्लक श्री 105 समन्वयसागर जी महाराज

आयोजक : सकल दिगम्बर जैन समाज, जयपुर

निवेदक

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	संयुक्त मंत्री	कोषाध्यक्ष	संगठन मंत्री	सांस्कृतिक मंत्री	मंत्री
सुशील पहाड़िया	सुनील बैनाड़ा	तेजकरण चौधरी	सीए मनोज कुमार जैन	लोकेन्द्र कुमार जैन	अशोक कुमार सेठी	जम्बू कुमार सोगाणी	राजेन्द्र कुमार सेठी
9928557000	9829561399	9828081698	9314503618	9828152143	9828810828	7665014497	9314916778

कार्यकारिणी सदस्य : अरुण कुमार जैन (पाटोदी), शांति विलय गंगवाल, अशोक कुमार जैन (छावड़ा), विजय जैन (डाँडोरी), राजेश काला (एडवोकेट), अशोक कुमार जैन (सोधा), जिनेन्द्र कुमार काला, भागचन्द जैन (पूर्व अध्यक्ष)

सहयोगी संस्थाएँ

श्री आदिनाथ महिला जागृति समिति, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

* आदिनाथ युवा मंडल, मीरा मार्ग जयपुर * विद्यासागर पाठशाला, मीरा मार्ग, जयपुर

अर्हम् चातुर्मास समिति जयपुर-2024

परम शिरोमणी संरक्षक

श्री कंवरीलाल जी प्रशोक कुमार जी
श्री कंवरीलाल जी प्रशोक कुमार जी
सुरेश कुमार जी विमल कुमार जी पाटनी
(आर.के.पुर मदनगंज-किशनगढ़)

संरक्षक

श्री नन्द किशोर जी प्रमोद जी पहाड़िया

लेडिस युथ महिला मंडल ने मनाया लहरिया उत्सव

रेणु पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर। सर्वोदय कॉलोनी की लेडिस युथ महिला मंडल ने ज्ञानोदय तीर्थ क्षेत्र नारेली में लहरिया उत्सव धूमधाम से बनाया। होस्ट रेनू पाटनी ने बताया कि शुरूआत णमोकार मंत्र,भक्तामर स्त्रोत से की गई, उसके पश्चात मंगल गीत गाये, सावन के ऊपर ही गेम खेले गए जिसमें हाउजी और झूले से संबंधित खेल खेले गए जिसमें बर्षा बडजात्या, श्वेता छाबड़ा, कविता पहाड़िया, रेखा बाकलीवाल विजेता रही। इसमें सभी महिलाएं लहरिया पहन कर आई माया गदिया, डिम्पी बडजात्या, अंजु पाटनी, अंतिमा गदिया मोजूद रही बाद में सभी सदस्यों ने मौसम के अनुकूल स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त उठाया। रेणु पाटनी ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच एवं वैश्य महासम्मेलन द्वारा किया गया पौधा रोपण

मुकेश जैन लार. शाबाश इंडिया

बड़ागांव धसान। हरियाली तीज के अवसर पर एक पौधा मां के नाम पौधा रोपण कार्य जन कल्याण तीर्थ बड़ागांव में आयोजित किया गया।यह आयोजन राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच एवं वैश्य महासम्मेलन तहसील इकाई के तत्वाधान में आयोजित किया गया जिसमें सर्वप्रथम आचार्य विमर्श सागर महाराज के चित्र का अनावरण कन्नू लाल नायक टीकमगढ़, हुकुमचंद हटैया ने किया । दीप प्रज्वलन रामनरेश राजपूत प्राचार्य सीएम राइज स्कूल, राजेश सोनी टीकमगढ़ ने किया। तदोपरांत फल वाले पौधे लगाए गए जिसमें आने वाले समय में पेड़ छाया, पशु पक्षियों को आश्रय, एवं फल देंगे। इस अवसर पर विजय सेठ, प्रकाश चंद्र जैन, राकेश हटैया,राजाराम ,ऋषभ वेध , प्रसन्न चौधरी, धीरेंद्र सिंघई, शिक्षक संजय जैन, शिक्षक सौरभ जैन, सुरेश वेद, संजय जैन सचिव, सौरभ शिवपुरी, संतोष त्यागी प्रमोद कोठिया ,मोनू ताम्रकार,चंदन सिंह, महेश गुप्ता, कैलाश असाटी, संतोषी जैन, शिक्षिका श्रीमती किरण जैन, प्रीति जैन, सरोज जैन, उषा जैन, सीमा जैन, मीना जैन, चमेली जैन सहित सभी सदस्य उपस्थित रहे।

अजमेर के बड़लिया स्थित इंजीनियरिंग कॉलेज में साइबर क्राइम अवेयरनेस पर एक कार्यशाला का हुआ आयोजन

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

अजमेर। बड़लिया में स्थित इंजीनियरिंग कॉलेज में साइबर क्राइम अवेयरनेस पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और प्रमुख वक्ता अजमेर जिले के पुलिस अधीक्षक देवेंद्र कुमार विश्नोई थे। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने छात्रों को साइबर क्राइम से बचने के तरीको के बारे में बताया। उन्होंने ने छात्रों से साइबर क्राइम के रियल केसेस के बारे में भी चर्चा की और बताया कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का अत्यधिक प्रयोग से भी बचाना चाहिए । कार्यशाला में समाज सेवक प्रकाश चंद जैन ने भी साइबर क्राइम से बचने के तरीको पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया की अजमेर पुलिस अधीक्षक साइबर क्राइम के मामलो को गंभीरता से ले रहे है लगभग 30 से 40 संस्थानों में साइबर क्राइम अवेयरनेस पर जागरूकता अभियान कर चुके है। प्राचार्य डॉ रेखा मेहरा ने मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक देवेंद्र कुमार विश्नोई का स्वागत किया और बताया की महाविधालय स्तर पर भी साइबर सिक्योरिटी क्लब और साइबर सिक्योरिटी ब्रांच के छात्रों के माध्यम से साइबर क्राइम अवेयरनेस के कार्यक्रमों का आयोजन समय समय पर किया जाता है। अंत में सहायक आचार्य डॉ सत्यनारायण ताजी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया और साइबर क्राइम होने के बाद आमजन को पुलिस रिपोर्ट कराने में आने वाली कठिनाइयो के बारे में चर्चा की। इस कार्यशाला में लगभग 100 के करीब छात्र-छात्राएं और संकाय सदस्य डॉ विमल चंद जैन, डॉ आर पी शर्मा, डॉ अनुराग गर्ग, डॉ सुरेश साहू, डॉ विनेश जैन आदि उपस्थित थे।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

दिगम्बर जैन महिला मण्डल, वरुण पथ की एक दिवसीय धार्मिक यात्रा संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन महिला मण्डल, वरुण पथ की एक दिवसीय धार्मिक यात्रा किशनगढ़, नारेली सुहावने मौसम में भव्यता के साथ संपन्न हुई। मंडल अध्यक्ष, डॉ.सुशीला टोंग्या ने बताया कि सभीने जयपुर से रवाना होकर किशनगढ़ में चतुर्मास कर रहे आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के दर्शन किए । वहां से रवाना होकर किशनगढ़ डम्पिंग यार्ड की शानदार में सुहावने मौसम में फोटोज खिंचवाई। सचिव वीणा जैन ने बताया कि नारेली के दर्शन कर बिरला वॉटर पार्क में महिला मंडल की पिकनिक का आयोजन मौसम के अनुरूप किया गया। सभी महिला सदस्यो द्वारा फिल्मी गीतों एवं भजनों पर डांस किया गया।

हरियाली तीज पर किड्स वैली प्ले स्कूल, रावतसर ने 100 पेड़ लगाने का अभियान शुरू किया

नरेश सिगची. शाबाश इंडिया

रावतसर। रावतसर के किड्स वैली प्ले स्कूल ने हरियाली तीज के अवसर पर एक विशेष अभियान की शुरूआत की है। राजस्थान के शिक्षा मंत्री मदन सिंह दिलावर द्वारा सुझावित इस अभियान का उद्देश्य अपने पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना है। इस अभियान के तहत स्कूल के प्रबंधक रघुवीर सोनी एंव श्रीमती रेखा सोनी ने बच्चों के साथ क्षेत्र में 500 पौधें लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है और इसी तहत उन्होंने एक दिन में ही 50 से अधिक पौधें लगाकर अपने लक्ष्य की और कदम बढ़ाया है। यह पहल न केवल पर्यावरण को सुधारने में मदद करेगी, बल्कि छोटे बच्चों पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। स्कूल के इस सराहनीय प्रयास से बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम और जागरूकता बढ़ेगी। किड्स वैली प्ले स्कूल का यह कदम रावतसर के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बन सकता है, जिससे अन्य स्कूल और संस्थान भी पढ़ाई के साथ साथ पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सक्रिय हो सकते हैं। प्रिंसिपल रेखा सोनी ने कहा कि बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में हम अपने पर्यावरण को महत्व देना, पानी बचाना जैसे कार्यों को सम्मिलित करके उन्हे एक अच्छा भविष्य प्रदान कर सकते है। स्कूल प्रबंधन को इस महान कार्य के लिए बधाई। आपकी मेहनत और समर्पण से हमारा पर्यावरण और समाज दोनों ही समृद्ध होंगे।

मन को तैयार करो अब कुछ नया करना है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी

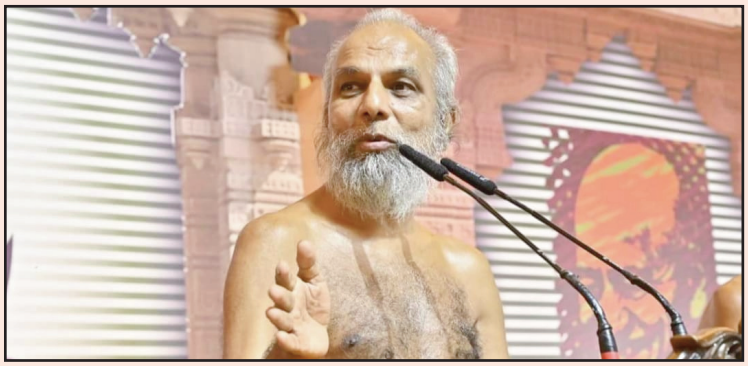

इंदौर. शाबाश इंडिया। उपरोक्त उदगार मुनिश्री प्रमाण सागर महाराज ने प्रातःकालीन धर्म सभा में व्यक्त किये उन्होंने कहा कि चातुर्मास का उद्देश्य पाप की प्रवत्तियों से हटाकर उनकी मनोवृत्ति को अच्छाई की ओर ले जाना है, ''जिस कार्य में रूचि बड़ जाती है,उसमें रुचि जग जाती है,जिस कार्य से अरुचि हो जाती है वंहा से मन हट जाता है।'' अपनी रुचि किस और जा रही है धर्म की ओर या अधर्म की ओर? अपना रिपोर्ट कार्ड खुद बनाइये और देखिये कि इस चातुर्मास में आपके अंदर परिवर्तन आ रहा है, या नहीं यदि परिवर्तन आ रहा है,तो यह बात दूसरों को बताइये ''अच्छे लोगों को जंहा मुखरित होना चाहिये बंहा वह मौन हो जाते है, इसीलिये समाज में बुराइयाँ अपनी जड़े फैलाती है'' मुनि श्री ने कहा कि कुछ लोग कहते है कि इतने मंदिर और इतनी बेदी और इतनी प्रतिमाएं क्यों विराजमान की जाती है? का जबाब देते हुये मुनि श्री ने कहा कि जिससे आप प्रेम करते हो उसकी फोटू कयी ऐंगल से खींचते हो और उन फोटूओं को सहज कर एल्वम में सजाकर रखते हो, उसी प्रकार जब किसी को देव धर्म और गुरु से प्रीती हो जाती है तो उसका मन संसार की बाहरी प्रवत्तियों में नही लगता उन्होंने कहा कि अच्छाई के प्रति रुचि जगाइये जिसके जीवन मे यह चरितार्थ होंने लगता है उसका ही जीवन रूपांतरित हो जाता है,जब जब भी रुची घटे तो तुरंत उसे गुरु के पास आकर री चार्ज करो उन्होंने कहा कि यदि आपकी रुचि में परिवर्तन आ रहा है,तो में समझूंगा मेरा समझाना और आपका आना सार्थक हो रहा है।आने बाली 11 अगस्त रविवार को जैन धर्म के 23 बे तीर्थंकर भगवान पारसनाथ स्वामी का मोक्ष कल्याणक है,पहले तो यह कार्यक्रम श्री सम्मेद शिखर जी में होता था लेकिन इस वर्ष का अवसर इंदौर बालों को मिला है कमेटी द्वारा कार्यक्रम तैयार किया गया हें, रविवार है छुट्टी का दिन भी है सभी लोग स परिवार रूचि के साथ भाग लीजिये यही मेरा मंगल आशीर्वाद है। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू एवं प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया रविवार को मोहता भवन में प्रातः 6.30 से बाल ब्र. अशोक भैया जी एवं अभय भैयाजी के मार्ग निर्देशन में मंगलाष्टक के साथ अभिषेक एवं शांतिधारा मुनि श्री के मुखारविंद से संपन्न होगी तत्पश्चात 7 बजे से भगवान पार्श्वनाथ की संगीतमय पूजन होगी, सभी महिला मंडल गणवेश में पधारें एवं पूजा की द्रव्य सजाकर लाएं।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस

श्रावण शुक्ल सप्तमी एक वृहद त्यौहार दिवस है, इस दिन को मोक्ष सप्तमी के रूप में जाना जाता है

22वें तीर्थंकर नेमिनाथ के मोक्ष जाने के हजारों वर्षों बाद 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था। इस जंबूद्वीप, भरत क्षेत्र काशी देश में बनारस नाम का एक नगर है। उसमें कश्यप गोत्री राजा विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम ब्राह्मी था। जब सोलहवें स्वर्ग के इन्द्र की आयु छह मास की अवशेष रह गई थी, तब इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता के आँगन में रत्नों की बरसात शुरू कर दी थी। रानी ब्राह्मी ने सोलह स्वप्नपूर्वक वैशाख कृष्णा द्वितीया के दिन इन्द्र के जीव को गर्भ में धारण किया था। नवमास पूर्ण होने पर पौष कृष्णा एकादशी के दिन पुत्र का जन्म हुआ। इन्द्रादि देवों ने सुमेरू पर्वत पर ले जाकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्श्वनाथ' नामकरण किया। इनकी आयु सौ वर्ष की थी। प्रभु की कांति - देहवर्ण मरकट मणि सदृष्य हरितवर्ण थी एवं शरीर की ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी। ये उग्रवंशी थे। भगवान पार्श्वनाथ ने 30 वर्ष की अल्पायु में ही तप धारण कर लिया था। सोलह वर्ष की आयु में पार्श्वनाथ एक दिन अपने इष्ट मित्रों के साथ वन में गए हुए थे, तब मार्ग में पंचाग्नियों में तप करता हुआ एक साधु मिला वह अग्नि को प्रदीप करने के लिए कुल्हाड़ी से एक मोटी लकड़ी को काटना चाह रहा था। अवधी ज्ञान से जानकर भगवान पार्श्व ने लकड़ी को काटने के लिए मना किया और कहा किया इसके भीतर 2 प्राणी बैठे हुए हैं। किन्तु मना करने पर भी उसने लकड़ी काट ही डाली, तत्क्षण ही उसके भीतर रहने वाले सर्प और सर्पिणी निकल पड़े और घायल हो जाने से छटपटाने लगे। पीड़ा से तड़पते हुए सर्प के जोड़े को भगवान पारसनाथ ने शांत होने का उपदेश दिया और उन्हें पंच नमस्कार (णमोकार महा मंत्र) मंत्र सुनाया जिसके प्रभाव से वे शांतभाव को प्राप्त हुए तथा महा विभूति के धारक धरणेन्द्र और पद्मावती हो गये। इधर कमठ का जीव महिपाल भी मरकर स्वर्ग का शम्बर नाम का ज्योतिषी देव हुआ। अनंतर कुमार जब तीस वर्ष के हो गये, तब एक दिन अयोध्या के राजा जयसेन ने उत्तम घोड़ा आदि की भेंट के साथ अपना दूत भगवान पाश्वनाथ के पास भेजा। भगवान ने भेंट लेकर उस दूत से अयोध्या की विभूति पूछी। उत्तर में दूत ने सबसे पहले भगवान ऋषभदेव का वर्णन किया पश्चात अयोध्या का हाल कहा। उसी समय ऋषभदेव के सदृश स्वयं को भी तो तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध हुआ है, लेकिन सामान्य मनुष्य की तरह अपनी आयु के 30 वर्ष व्यर्थ गवां दिए यह विचार करते हुए पार्श्वनाथ को आत्मज्ञान प्राप्त हो गया और विषय वासना को छोड़कर दीक्षा लेने का निश्चय कर लिया। ऐसा सोचते हुए भगवान गृहवास से पूर्ण विरक्त हो गये और लौकांतिक देवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए। प्रभु देवों द्वारा लाई गई विमला नाम की पालकी पर बैठकर अश्व वन में पहुँच गये। वहाँ त्रिदिवसीय उपवास का नियम लेकर पौष कृष्णा एकादशी के दिन प्रातःकाल के समय सिद्ध भगवान को नमस्कार करके प्रभु तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। प्रथम पारणा के दिन गुलमसेटपुर में प्रवेश किया। नगर के धन्य नामक राजा ने अष्ट मंगल द्रव्यों से प्रभु का पड़गाहन कर प्रथम पारणा पायस का आहार करवाया। आहार से प्रभावित होकर देवों ने धन्य राजा के घर पंचाश्चर्य प्रकट किए। छद्मस्थ अवस्था के चार मास व्यतीत हो जाने पर भगवान अश्ववन में पंहुचकर देवदार वृक्ष के नीचे विराजमान होकर ध्यान में लीन हो गये। इसी समय कमठ का जीव कालसंवर नाम का ज्योतिषी देव आकाशमार्ग से जा रहा था, अकस्मात उसका विमान रुक गया, उसे विभंगावधि से पूर्व का बैर बंध स्पष्ट दिखने लगा। बदले की भावना से क्रोधवश महागर्जना, महावृष्टि, तूफान आदि से महा उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया। बड़े-बड़े पहाड़ तक लाकर तप में लीन पार्श्वप्रभु के समीप गिराये इस प्रकार उसने सात दिन तक लगातार भयंकर उपसर्ग किया। अवधिज्ञान से यह उपसर्ग जानकर धरणेन्द्र और पद्मावती पृथ्वी तल से बाहर निकलकर भगवान को सब ओर से घेरकर धरणेन्द्र ने अपने फणों के ऊपर उठा लिया और पद्मावती वज्रामय छत्र तान कर खड़ी हो गई। इस तरह स्वभाव से ही क्रूर प्राणी इन सर्प-सर्पिणी ने अपने ऊपर किये गये उपकार को याद रख कर तपस्या में लीन भगवान पर उपसर्ग के समय रक्षा की। तदनंतर ध्यान के प्रभाव से प्रभु का मोहनीय कर्म क्षीण हो गया और बैरी कमठ का सब उपसर्ग दूर हो गया। मुनिराज पार्श्वनाथ ने चैत्र कृष्ण चतुर्थी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। उसी समय इन्द्रों ने आकर समवसरण की रचना करके केवलज्ञान की पूजा की। कालसंवर नाम का देव भी काललब्धि पाकर उसी समय शांत हो गया और उसने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। यह देख, उस वन में रहने वाले सात सौ तपस्वियों ने मिथ्यादर्शन छोड़कर संयम धारण कर लिया, सभी शुद्ध सम्यग्दृष्टि हो गये और बड़े आदर से प्रदक्षिणा देकर भगवान की स्तुति-भक्ति की। आचार्य कहते हैं कि पापी कमठ के जीव का कहाँ तो निष्कारण वैर और कहाँ शांति। इसलिए संसार के दुःखों से भयभीत प्राणियों को वैर-विरोध का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। पार्श्वप्रभु ने 83 दिन की कठोर तपस्या के पश्चात 84वे दिन केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था। भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण में स्वयंभू सहित दस गणधर, सोलह हजार मुनिराज, सुलोचना आदि सहित छत्तीस हजार गणिनि आर्यिकाएँ, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएँ थीं। इस प्रकार बारह सभाओं को धर्मोपदेश देते हुए भगवान ने उनहत्तर वर्ष सात माह तक विहार किया। अंत में आयु का एक माह शेष रहने पर विहार करना बंद हो गया। प्रभु पार्श्वनाथ सम्मेदाचल के शिखर पर छत्तीस मुनियों के साथ प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में अष्ट कर्मों का नाश कर सिद्धपद को प्राप्त हो गये। देवों ने भक्ति पूर्वक उनके निर्माण कल्याण का उत्सव किया। इस दिन को मोक्ष सप्तमी के रूप में भी मनाया जाता है एवम अपना भव कल्याणकारी बनाने की दृष्टि से कन्याएं व्रत/उपवास रखती है। यद्यपि उपवास/व्रत कोई भी रख सकता है। श्री पार्श्वनाथ ने ही जैन धर्म के पंच महाव्रत की शिक्षा दी जिनमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, एवम अपरिग्रह जिसमे ब्रह्मचर्य भी सम्मिलित है। अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का समावेश एक ही व्रत में होता था। श्री पार्श्वनाथ ने ही चतुर्विध संघ की स्थापना की थी जिनमे मुनि, आर्यिका, श्रावक एवं श्रविका होते थे। आज भी जैन समाज की यही परंपरा जारी है। भगवान पार्श्वनाथ ने जैन धर्म को जन जन के बीच लोकप्रिय बनाकर एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य कर गए, जिसकी आभा आज भी जीवंत है। भूगर्भ प्रकट होने वाली प्रतिमाएं एवं जिन मंदिरों में विराजित सबसे ज्यादा प्रतिमाएं तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की ही है।

संकलन
भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम जयपुर।

श्रावण में ठाकुरजी झुल रहे झुला, दूदाधारी मंदिर में जयकारों के साथ मना रहे झुलनोत्सव

श्री दूदाधारी गोपाल मंदिर में छोटी तीज से नंदोत्सव तक मनाया जाएगा उत्सव

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। धर्मनगरी भीलवाड़ा के लाखों भक्तों की आस्था के प्रमुख केन्द्र सांगानेरी गेट स्थित श्री दूदाधारी गोपाल में जगद्गुरू श्री निम्बाकाचार्य पीठाधीश्वर श्री श्यामशरण देवाचार्यश्री 'श्रीजी' महाराज के निर्देशानुसार श्रावणी तीज(छोटी तीज) से ठाकुरजी के दरबार में झुलनोत्सव शुरू हो गया है। ये 22 दिवसीय झुलनोत्सव जन्माष्टमी के अगले दिन नंदोत्सव तक चलेगा। इसे लेकर भक्तों में उत्साह का माहौल है। मंदिर के पुजारी कल्याणमल शर्मा ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी ठाकुरजी की सेवा में झुलनोत्सव मनाया जा रहा है। इसके तहत रक्षाबंधन तक प्रतिदिन अलग-अलग तरह के श्रृंगार के साथ ठाकुरजी के झुले की सेवा होगी तो रक्षाबंधन से जन्माष्टमी तक प्रतिदिन अलग-अलग तरह की झांकियां सजाई जाएगी। झुलनोत्सव की सजावट के लिए वृन्दावन से मोगरा व गेंदा के साथ लटकन आदि मंगाई गई है। झुलनोत्सव का प्रारंभ छोटी तीज पर आम्र कुंज के झुले के साथ हो गया। इसके तहत गुरूवार को आम्र पल्लव का झूला सजा ठाकुरजी की सेवा की गई। पुजारी भक्तों के जयकारों के बीच ठाकुरजी को झुला झुलाते रहे। रक्षाबंधन तक प्रतिदिन अलग-अलग तरह से ठाकुरजी की सेवा में झुले सजाए जाएंगे। इनमें सब्जी,फल, मेवा,मिठाई आदि के झुले भी सजाए जाएंगे। झुलनोत्सव के तहत प्रतिदिन शाम 7.30 से रात 9.30 बजे तक ठाकुरजी के झुले के दर्शन भक्तगण कर पा रहे है। दर्शनों के लिए प्रतिदिन शहर के विभिन्न क्षेत्रों से भक्तगण पहुंच रहे है।

हर वार को अलग-अलग रंग की झांकिया सजेगी: मंदिर के पुजारी शर्मा ने बताया कि रक्षाबंधन के बाद जन्माष्टमी तक ठाकुरजी के दरबार में घटाएं(झांकिया) सजाई जाएगी। इसके हर वार को अलग-अलग रंगों से झांकियों की सजावट होगी। इसके तहत सोमवार को सर्द घटा होगी यानि ठाकुरजी पूरी तरह श्वेत वस्त्रों में होंगे। मंगलवार को लाल, बुधवार को हरा, गुरूवार को पीला, शुक्रवार को नीला, शनिवार को श्याम एवं रविवार को गुलाबी घटा की छटा बिखरेगी। उत्सव को लेकर मंदिर में सजावट के साथ विशेष तैयारियां भी की गई है।

चित की एकाग्रता को ध्यान कहा जाता है 'ध्यान' से आत्म मुक्ति पानाः जैन संत आचार्य आर्जव सागर जी

सौरभ जैन. शाबाश इंडिया

पिडावा। श्री सांवलिया पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर पिड़ावा में आचार्य 108 श्री आर्जव सागर महाराज ससंघ का 37वां चातुर्मास बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ चल रहा है। जिनके साथ में पांच मुनिराज संघ में विराजमान है। जैन समाज प्रवक्ता मुकेश जैन चेलावत ने बताया कि आचार्य श्री के सानिध्य में प्रतिदिन ज्ञान की गंगा बह रही है। जिसमें श्रावक श्राविकाओं को पुण्य लाभ मिल रहा है। शुक्रवार को प्रातः सन्त आर्जव सागर महाराज ने अपने प्रवचन में ध्यान की परिभाषा बताते हुए कहा कि चित की एकाग्रता को ध्यान कहा जाता है चित की एकाग्रता शुभ भी हो सकती है और अशुभ भी ध्यान का उद्देश्य स्वयं को साकार करना, आत्म मुक्ति पाना और आत्मा को पूर्ण स्वतंत्रता की ओर ले जाना है इसका लक्ष्य उसे शुद्ध अवस्था तक पहुंचाने और उसी में रहने से हैं जो शुद्ध चेतन मानी जाती है तथा किसी भी लगाव धृणा से परे हैं ध्यान करने वाला सिर्फ एक ज्ञाता दृष्टा बनने का प्रयास करता है। ध्यान के चार प्रकार बताये गये हैं आर्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान इनमें से पहले दो अशुभ ध्यान माना गया है और शेष दोनों को शुभ ध्यान पहले से दो ध्यान संसार के कारण है अर्थात संसार में भटकाने वाले हैं इसलिए छोड़ने योग्य है अंत के दो ध्यान मोक्ष के कारण है अतः ग्रहण करने योग्य है। वही भगवान पार्श्वनाथ का मौक्ष निर्माण महोत्सव रविवार को आचार्य आर्जव सागर महाराज के सानिध्य में बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जायेगा। जिसमें संगीतमय पार्श्वनाथ विधान के बाद मौक्ष लाडू चढ़ाया जायेगा।

दिगम्बर जैन महिला मंडल ने मनाया सावन महोत्सव

चित्तौड़गढ़. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन महिला मंडल के तत्वावधान में गुरुवार को मांगलिक धाम में सावन महोत्सव का आयोजन किया गया। अध्यक्ष मैना बज ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ मनोरमा अजमेरा ओर सुचिता गदिया द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। अतिथियों का स्वागत उपरना पहनाकर किया गया।महिला महासमिति की अध्यक्ष मंजु सेठी ने मंच संचालन किया और बताया कि महिलाओं ने परंपरागत लहरिया ड्रेसकोड के साथ एकत्रित होकर हर्षोल्लास के साथ सावन महोत्सव में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया ओर नृत्य के माध्यम से फिल्मी गीतों पर आधारित धुनों पर समां बांधा। इस दौरान संरक्षिका मनोरमा अजमेरा द्वारा अनेक मनोरंजनात्मक गेम्स , हाउजी आदि खिलाए गए ओर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।संरक्षिका नम्रता गदिया ने बताया कि सावन क्वीन व लहरिया क्वीन स्पर्धा भी रखी गई जिसमें आशा अजमेरा व मैना सोगानी विजेता चुनी गई व ताज पहनाकर स्वागत किया गया।कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रियंका गदिया रंजना रामावत का विशेष सहयोग रहा।कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए लक्की ड्रा निकाला गया। अंत में सभी ने स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाया।महामंत्री आशा वैद ने सभी का आभार व्यक्त किया।

भगवान की प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा कषायों का बंधन: आचार्य सुंदरसागर महाराज

जब तक आत्मा के अंदर परिवर्तन नहीं आएगा धर्मात्मा नहीं बन पाएंगे

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। भगवान बनने की राह में कषाय सबसे बड़ी बाधा है। कषायों को छोड़ने का पुरूषार्थ करेंगे तो भगवान बन जाएंगे। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों को छोड़ अपना गुणस्थान बढ़ाना होगा। अपरिग्रह की पालना करते हुए ज्यादा वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिए। ये विचार शहर के शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित सुपार्श्वनाथ पार्क में श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में चातुर्मासिक(वषायोग) प्रवचन के तहत शुक्रवार को राष्ट्रीय संत दिगम्बर जैन आचार्य पूज्य सुंदरसागर महाराज ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अनादिकाल से जो हम धर्म से जोड़ रहा है वह आदिवासी है। आदि को मानने वाला अनादिकाल से धर्म को मानता है ओर अपने ज्ञान दर्शन में ही रहता है। जीवन में मुक्ति पानी है तो कसाई नहीं बनकर कषाय जीतने वाला बनना होगा। कषाय नहीं छोड़ पाए तो इस संसार सागर में ही तैरना पड़ेगा। आचार्यश्री ने कहा कि राजनीति करने वाले मायाचारी नहीं करके जनता की सेवा करे तो ही वह जनसेवक है। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर की वाणी आत्मा को परमात्मा बनने की प्यास जगती है। इसे धर्म कहते है ओर इसकी पालना करने वाला धर्मात्मा कहलाता है। जीयो ओर जीने दो सुनने के बाद जब तक आत्मा के अंदर परिवर्तन नहीं आएगा तब तक धर्मात्मा नहीं बन पाएंगे। धर्मात्मा मयार्दा में जीने वाला होने के साथ जिनशासन से जोड़ने का कार्य करता है। अपने को धर्म से जोड़ना है तो भगवान महावीर को अपनी आत्मा में विराजमान करो। इससे पूर्व प्रवचन में मुनि शुभमसागर महाराज ने कहा कि हमने पर के लिए जोड़ना सीख है पर अपनी आत्मा के बारे में भूल रहे है। संसार के लिए जोड़ने से काम नहीं चलेगा अपनी आत्मा के लिए धर्म को जोड़ लिया तो जीवन सुधर जाएगा। हम लोगों के लिए नहीं बने समाज के लिए कार्य करे। धर्म का मार्ग निर्माण के लिए नहीं बल्कि निर्वाण के लिए है। स्व के लिए छोड़ना सीखो। जिन वस्तुओं से कषाय पैदा होते है उनसे दूर रहो। जीवन का कल्याण करना है तो खुद को कषायों से मुक्त रखना होगा। कषाय हमारी मुक्ति के मार्ग में बाधक है। सांयकालीन धर्म

कक्षा में आर्यिका सुलक्ष्यमति माताजी ने बताया कि मायाचारी करने से तिर्यंच आयुबंध होता है। मिथ्याचारी को मनुष्य आयु बंध होगा। त्यागी को देव आयु का बंध होगा। जीवात्मा के कल्याण के लिए सम्यक दृष्टि बनने का लक्ष्य बनाओ। श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के अध्यक्ष राकेश पाटनी ने बताया कि भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशान्त मेवाड़ा ने सुपार्श्वनाथ भगवान के दर्शन कर धर्मसभा में राष्ट्रीय संत आचार्य सुंदरसागरजी महाराज ससंघ को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने भव्य चातुर्मास आयोजन पर श्री महावीर दिगम्बर जैन समाज सेवा समिति को शुभकामनाएं दी। उनका समिति की ओर से अभिनंदन किया गया। सभा के शुरू में श्रावकों द्वारा मंगलाचरण,दीप प्रज्वलन,पूज्य आचार्य गुरूवर का पाद प्रक्षालन कर उन्हें शास्त्र भेंट व अर्ध समपर्ण किया गया। संचालन पदमचंद काला ने किया। महावीर सेवा समिति द्वारा बाहर से पधारे अतिथियों का स्वागत किया गया। मीडिया प्रभारी भागचंद पाटनी ने बताया कि पूज्य आचार्य सुंदरसागरजी महाराज ससंघ के सानिध्य में 11 अगस्त को मोक्ष सप्तमी महोत्सव मनाया जाएगा।

सिद्धेश्वर हनुमान मंदिर से गंगाजल लाने हरिद्वार के लिए रथ रवाना

12 अगस्त को मन्दिर में होगा विशाल महाशिवाभिषेक

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्रावण मास के चतुर्थ सोमवार, 12 अगस्त को स्वेज फार्म, ज्योतिबा फूले कॉलेज के पास स्थित सिद्धेश्वर महादेव हनुमान मंदिर में भगवान भोलेनाथ का शिव महाअभिषेक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। आयोजक पंकज ओझा और गब्बर कटारा ने बताया कि प्रातः 5:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक कार्यक्रम आयोजित होगा। इससे पहले 9 अगस्त शुक्रवार को सुबह 11:15 बजे आचार्य अवधेश दास महाराज की उपस्थिति में गंगाजल लाने के लिए गंगाजलरथ रवाना किया गया।

हरिद्वार सहित पवित्र तीर्थस्थलों से लाया जाएगा पवित्र जल

उल्लेखनीय है कि इस आयोजन के लिए हरिद्वार से 21 हजार लीटर पवित्र गंगाजल एक टैंकर में लाया जाएगा, जिसे जयपुर लाकर भगवान शिव का महाशिवाभिषेक किया जाएगा। इस आयोजन में देश के सभी प्रमुख तीर्थस्थलों जैसे कैलाश मानसरोवर, सरयू नदी, गंगा नदी, यमुना नदी, नर्मदा नदी, गंगा सागर, बद्रीनाथ, पुष्कर, और रामेश्वरम से भी पवित्र जल लाने की व्यवस्था की गई है। इस मौके पर महादेव का अभिषेक विजया, प्रियंगु, नागकेसर, इत्र, दूध, शहद आदि भोलेनाथ को प्रिय पवित्र औषधियों और वेद मंत्रों के साथ किया जाएगा। भक्तों के लिए बेलपत्र और शमी पत्र की व्यवस्था भी समिति करेगी।

गुलाबी नगरी के इतिहास में अनूठा आयोजनः गौरतलब है कि गुलाबी नगरी के इतिहास में ऐसा आयोजन

पहले कभी नहीं हुआ। इस आयोजन को जयपुरवासियों की सामुहिक आस्था के प्रतीक के रूप में देखा जा रहा है। इस अवसर पर आयोजक पंकज ओझा, गब्बर कटारा सहित आयोजन समिति के प्रमुख सदस्य सर्वेश्वर शर्मा, अभिषेक शर्मा, जे.डी. माहेश्वरी, सुधीर जैन गोधा, रामनिवास मथुरिया, अविनाश खंडेलवाल, मनीष गुप्ता, नमित जैन, अभिमन्यु शर्मा, जीतेश शर्मा, हर्षित शर्मा, अजय जैन, संजय अग्रवाल, भगवती सिंह बारेठ, लक्ष्य सिंह, डॉ. भारती शर्मा, शिवा गौड़, प्रमोद शर्मा, सुनील गौड़, ममता पंचोली, सुमित तिवारी, रीना शर्मा, रश्मि शर्मा, उमा भारती, विनीता अग्रवाल और अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।

जैसा भविष्य चाहिए वैसे ही कर्म करने चाहिए,स्वयं के भाग्य लिखने की ताकत आपके पास ही है : आर्यिका वर्धस्व नंदनी

तिजारा, अलवर. शाबाश इंडिया

चंद्र प्रभु अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में विराजमान दिगंबर जैन आचार्य वसुनंदी जी महाराज की शिष्या आर्यिका वर्धस्व नंदिनी माताजी प्रतिदिन प्रातः आर्ट आफ थिंकिंग विषय पर विशेष उद्बोधन प्रदान कर जीवन जीने की कला सीखा रही है। उन्होंने कहा कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर है क्योंकि प्रत्येक जीव अपने भाग्य का निर्माता होता है। उन्होंने श्रावकों से कहा कि कितना मुश्किल होता है यदि यह कहा जाए कि, सामने वाला जो भी करें अच्छा या बुरा, उसका फल आपको मिलेगा, तब आप सही में पराधीन हो जाते हैं। दुखी और तनावग्रस्त हो जाते हैं। किंतु अपने भविष्य एवं भाग्य को लिखने की ताकत आपके स्वयं के पास ही है। अतः अपना भाग्य लिखने में प्रमादी ना बने। किसी के साथ बुरा व्यवहार कर धोखा दे,हिंसक प्रवृत्ति अपना कर प्रसन्न नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह सब आप स्वयं अपने भविष्य में लिख रहे हैं। इसलिए जैसा भविष्य चाहते हैं वैसा कर्म करना प्रारंभ करें। उन्होंने लोगों को सावधान करते हुए कहा कि अपनी करनी का फल आज नहीं तो कल अवश्य मिलेगा इसके लिए आपको तैयार रहना चाहिए। धर्म जागृति संस्थान के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री संजय जैन बड़जात्या ने बताया कि आर्यिका संघ के वर्षा योग करने से जहां तिजारा की धरा पर महती धर्म प्रभावना हो रही है वहीं लोगों में जीवन के प्रति सकारात्मक सोच का विकास हो रहा है।

चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर मुहाना में होगा कल्याण मंदिर विधान

रविवार 11अगस्त को भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक पर प्रातः 8 बजे से होगा पूजन विधान

तीर्थंकर पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक के पावन अवसर पर

भव्य कल्याण मंदिर विधान

प्रातः 8 बजे अभिषेक शांतिधारा, निर्वाण लाडू, प्रातः 9 बजे विधान पूजन

रविवार, 11 अगस्त 2024 प्रातः 8 बजे से

स्थानः चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर पारस विहार, मोहनपुरा मुहाना

सानिध्यः प्रसिद्ध गायक श्री अशोक गंगवाल एवं श्रीमती समता गोदिका

सम्पर्क सूत्रः पवन जैन गोदिका, 9314939330 राकेश गोदिका, 9414078380

समन्वयक

बी.एल. गोदिका, बी.के. गोदिका, सुभाष गोदिका, पवन गोदिका, अनिल गोदिका, दिनेश गोदिका, राकेश गोदिका, राजकुमार गोदिका, दिलिप गोदिका, अरुण काला, सुशील गोदिका, रामचन्द्र गोदिका, प्रदीप गोदिका व सुदेश गोदिका

संयोजक

संतोष जैन सड्डावाला, धर्मेंद्र गोदिका, विरेन्द्र कुमार सेठी, अभिषेक गोदिका, प्रतीक गोदिका, अनुज गोदिका, सुनील जैन, राजेंद्र बाकलीवाल, मुकेश जैन, विमल जैन, सोभाग मल जैन, राकेश संघी, अशोक सेठी

आयोजकः चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, पारस विहार, मोहनपुरा मुहाना टर्मिनल मार्केट, मुहाना मंडी, मानसरोवर, जयपुर

जयपुर. शाबाश इंडिया। भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण कल्याणक महोत्सव पर श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर पारस विहार मोहनपुरा , मुहाना फल सब्जी मंडी के पास पर रविवार , 11 अगस्त को प्रातः 8 बजे से अभिषेक, शांतिधारा, निर्वाण लाडू समर्पण तथा प्रसिद्ध गायक श्री अशोक गंगवाल एवम श्रीमती समता गोदिका द्वारा साजो संगीत से भव्य कल्याण मंदिर विधान पूजन आयोजित की जायेगा। मंदिर समिति के पवन गोदिका ने बताया कि प्रातः 8 बजे से अभिषेक, शांतिधारा तथा मूल वेदी पर मोक्ष कल्याणक लड्डु समर्पण किया जायेगा। प्रातः 9 बजे से साजो संगीत से विधान पूजन प्रारंभ होगी। समन्वयक राकेश गोदिका ने बताया कि चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर पारस विहार के लिए विजय पथ मानसरोवर से मुहाना मंडी रोड केसर चौराहा होते हुए मुहाना फल सब्जी मंडी में आकर ज्योति बा फुले की मूर्ति के पीछे वाली रोड से आधा किलोमीटर चल कर सीधे पारस विहार स्थित चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर पहुंचा जा सकता है।

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर बीस पंथ आम्नाय प्रबन्ध समिति द्वारा आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज को किया श्रीफल भेंट

सीकर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर बीस पंथ आम्नाय प्रबन्ध समिति सीकर द्वारा समाज की तरफ से शुक्रवार को परम पूज्य वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर महाराज को उदयपुर स्थित पारसोला में वर्ष 2025 के चातुर्मास सीकर करने हेतु श्रीफल भेंट किया गया । आचार्य श्री ने इस अवसर पर सभी समिति सदस्यों व समाज को आशीर्वाद प्रदान किया । प्रबन्ध समिति द्वारा इस अवसर पर आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन किया गया। समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि प्रबन्ध समिति के महेश बाकलीवाल, अजीत जयपुरिया , सन्तोष बिनायक्या, सुमतप्रकाश मोदी , आशीष जयपुरिया के साथ समाज के आनन्द मोदी, सुनिता जयपुरिया , रीतू जयपुरिया एवं सीता देवी जैन भी उपस्थित थे।

सीकर से आचार्य श्री वर्धमान सागर जी का जुड़ावः सन 1969 में मात्र 19 वर्ष की उम्र में श्री महावीर जी में आचार्य धर्म सागर जी से मुनि दीक्षा अंगीकार की । उनके दीक्षा गुरु आचार्य श्री धर्मसागर जी की समाधि सीकर में ही वैशाख कृष्णा नवमी विक्रम संवत 2044 सन 1987 में हुई।

चिकित्सा शिविर में 450 विद्यार्थियो व 50 स्टॉफ की स्वास्थ्य जांच हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया

जामडोली स्थित केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त शंकर लाल धानुका विद्यालय में भारत विकास परिषद जयपुर महानगर शाखा के सौजन्य से दो दिवसीय स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 450 विद्यार्थियों व 50 के स्टाफ की जांच की गई। शिविर का उद्घाटन केशव विद्यापीठ समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश गुप्ता, संयुक्त सचिव अशोक गुप्ता, विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष अनिल कुमार व डॉक्टर विकास शर्मा ने किया। इसके बाद राष्ट्रगान के साथ स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर डाक्टर की टीम के साथ प्राचार्य कृष्ण यादव उपस्थित रहे। केशव विद्यापीठ समिति के अध्यक्ष गुप्ता ने बताया कि शिविर में विद्यार्थियों, शिक्षकों व कर्मचारियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जायेगा। इस शिविर में दांत, नेत्र, सामान्य फिजीशियन के साथ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध कराई गई है। आवश्यकतानुसार चिकित्सक की सलाह से स्वास्थ्य रिपोर्ट को अभिभावक को उपलब्ध कराई जाएगी।

वर्षायोग में जैन सन्त अनुसरण सागर महाराज का पड़गाहन एवं निअन्तराय आहार चर्या

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान मे शुक्रवार को चातुर्मास 2024 के तहत जैन सन्त अनुसरण सागर महाराज का श्रद्धालुओं ने पड़गाहन करके निअन्तराय आहार चर्या करवाई। जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष सुनील भाणजा एवं मीडिया प्रभारी विमल जौंला ने बताया कि चातुर्मास कार्यक्रम के अन्तर्गत शुक्रवार को सुबह प्रवचन सभा आयोजित हुई जिसमें मंगलाचरण मीनाक्षी भाणजा ने किया। उन्होंने बताया कि सभा के पश्चात मुनि अनुसरण सागर महाराज का विधि विधान एवं शुद्धि पूर्वक पड़गाहन करके आहार चर्या करवाने का सौभाग्य नरेंद्र कुमार दिलीप कुमार भाणजा को मिला। इस दौरान मुनि श्री की पूजा अर्चना कर श्री फल अर्ध्य चडाक र आशीर्वाद लिया। जौंला ने बताया कि रुक्मणी देवी सुनीता जैन अनिता भाणजा हितेश छाबड़ा अमित जैन अमन जैन अनुज जैन अर्हम जैन अवनी जैन सुलोचना भाणजा यामिनी छाबड़ा वंशिका छाबड़ा को पूजा अर्चना कर आहार चर्या करवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कोथली (कर्नाटक) से प्रतिनिधी मंडल जयपुर आया

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री 108 आचार्य रत्न देशभूषण मुनि दिगम्बर जैन आश्रम ट्रस्ट, कोथली जिला बेलगांव (कर्नाटक) से ट्रस्ट मंडल के पदाधिकारियों का एक 12 सदस्यीय प्रतिनिधी मंडल अचरोल स्थित देशभूषण आश्रम में पधारे और वहां श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन कर आश्रम की व्यवस्थाओं का अवलोकन किया और उसकी बहूत प्रशंसा की। उन्होंने कोथली स्थित देशभूषण आश्रम द्वारा संचालित स्कूल गर्ल्स होस्टल एवं अस्पताल की व्यवस्थाओं से एवं नई योजनाओं से अचरोल देशभूषण आश्रम के पदाधिकारियों को अवगत करवाया। प्रतिनिधी मंडल में अध्यक्ष वर्द्धमान सदलगे, मंत्री शांतिनाथ तरडले, ट्रस्टी आदिनाथ शेट्टी, महावीर मुकासे, जितेन्द्र पाटिल, सुरेश जैन, स्नेहलता जैन, सुधीर जैन, तृप्ति जैन का नेमप्रकाश खंडाका अध्यक्ष, संतकुमार खंडाका सचिव एवं मुख्य संयोजक रूपेन्द्र छाबड़ा ने तिलक लगाकर माला एवं दुपट्टा ओढ़ाकर स्वागत किया।

हरियाली तीज पर हरियाली क्विन प्रतियोगिता आयोजित की गयी

भिंड. शाबाश इंडिया। नगर के लशकर रोड पर स्थित महावीर कीर्ति स्तंभ जैन मंदिर परिसर में जैन मिलन अंजना द्वारा क्विन प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमे ऋतु जैन प्रथम एवं द्वितीय मुस्कान जैन, ग्रीन मैचिंग में प्रथम नीलू जैन, द्वितीय नीलम जैन, फन गेम में कंटो जैन प्रथम रही, सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । हरियाली तीज कार्यक्रम की सयोजिका वी. रेनू जैन, वी. सुमन काला, निर्णायक में क्षेत्रीय उपाध्यक्ष वी. रेखा जैन , धार्मिक चेयरमैन वी. स्नेहलता , क्षेत्रीय सदस्य वी. आभा जैन, वी. मीरा जैन, वी. सुनीता जैन, वी. रेनू जैन, सहित जैन मिलन अंजना की सदस्य उपस्थित रही। **सोनल जैन की रिपोर्ट**

जिला प्रमुख सरोज बंसल ने भारत गौरव आर्यिका विज्ञाश्री माताजी से लिया आशीर्वाद

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा सहस्त्र कूट जिनालय विज्ञा तीर्थ गुन्सी में टोंक जिला प्रमुख सरोज बंसल ने गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी के समक्ष श्री फल चढ़ाकर आशीर्वाद लिया एवं विश्व में शांति की कामना के लिए पूजा अर्चना की। जैन समाज के मीडिया प्रभारी विमल जौंला ने बताया कि विज्ञा तीर्थ गुन्सी गांव में महोत्सव के तहत जिला प्रमुख सरोज बंसल ने भारत गौरव विज्ञाश्री माताजी का एवं भगवान सुमतिनाथ जी की विशेष पूजा अर्चना के साथ भक्ति कीर्तन किया इस दौरान जिला प्रमुख सरोज बंसल ने भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी संघ के समक्ष श्री फल चढ़ाकर आशीर्वाद लिया।